Aakhri Nabi Ki Shaan Ba Zabane Quran (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1445 हिजरी में मदनी मुज़ाकरों से पहले होने वाले मुख़्तलिफ़ बयानात का तहरीरी गुलदस्ता

हफ़्तावार रिसाला : 369
Weekly Booklet : 369

आख़िरी नबी की शान ब ज़बाने क़ुरआन

सफ़हात 44

सहाबए किराम (علیہم الرضوان) और महफ़िले मीलाद 08

आमदे मुस्तफ़ा की एक ख़ास बरकत 10

मीलाद शरीफ़ बयान करना अल्लाह पाक की सुन्नत है 27

क्या सिर्फ़ हुज़ूर ही रहमतुल्लिल आलमीन हैं ? 41

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी)

पहले इसे पढ़िये

अल्लाह पाक का प्यारा प्यारा कलाम क़ुरआने करीम दर अस्ल **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पूरी पूरी ना'त है । क़ुरआने करीम में जगह जगह नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत, फ़ज़ाइलो कमालात और मो'जिज़ात का बयान है । उ़लमाए किराम ने इस मौज़ूअ़ पर कई किताबें तह़रीर फ़रमाई हैं ।

आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में 1445 हिजरी रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ में रोज़ाना होने वाले मदनी मुज़ाकरों में अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बयान फ़रमाते जिस का मौज़ूअ़ : **''आख़िरी नबी की शान ब ज़बाने क़ुरआन''** होता था। या'नी क़ुरआनी आयात से प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइलो कमालात शरीफ़ बयान किये जाते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे **''हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़''** के इस्लामी भाइयों की मदद से अमीरे अहले सुन्नत के उन बयानात का मज्मूआ़ बनाम **''आख़िरी नबी की शान ब ज़बाने क़ुरआन''** रिसाले की सूरत में मन्ज़रे आ़म पे लाया जा रहा है। इस का ख़ुद भी मुत़ालआ़ कीजिये और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये दूसरों को भी दीजिये। मुबल्लिग़ीन के लिये येह एक मुकम्मल बयान है, **अल्लाह** करीम इसे अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाए और इसे हमारे लिये बे ह़िसाब नजात का ज़रीआ़ बनाए। اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّين صلّى اللّٰهُ عليه واٰله وسلّم

एक पंजाबी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

दसां की मैं मुस्त़फ़ा दी किडी सोहणी शान ए — आप दी ता'रीफ़ विच सारा ई क़ुरआन ए
पढ़ के तू वेख जेड़ा मरज़ी सिपारा — क़सम ख़ुदा दी मैं नूं सब नालों प्यारा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

आख़िरी नबी की शान ब ज़बाने क़ुरआन

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 44 सफ़्हात का रिसाला **"आख़िरी नबी की शान ब ज़बाने क़ुरआन"** पढ़ या सुन ले उसे मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बना।
اٰمِين بِجاهِ خاتمِ النّبيّٖن صلّى اللّٰه عليه واٰلهٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रत मौलाना शाह मुह़म्मद रुक्नुद्दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : अगर कोई रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के मुबारक महीने में येह दुरूद शरीफ़ "اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه" सवा लाख मरतबा पढ़े तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से नवाज़ दिया जाएगा। (रुक्ने दीन, 1/164)

ऐ रसूले ज़ी वक़ार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा ऐ अ़रब के ताजदार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा
हो फ़िदा अ़त्तारे ज़ार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा जल्वा कर दे आश्कार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

(वसाइले बख़्शिश, स. 149, 151)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआने करीम और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! अल्लाह पाक का जिस क़दर शुक्र अदा किया जाए उतना कम है कि उस ने हम गुनहगारों को अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में पैदा फ़रमाया और येह करम कितना बड़ा है कि हमें येह ने'मत बिन मांगे मिली है, हम **अल्लाह** का शुक्र अदा करते हैं। फिर करम बालाए करम येह भी हुवा कि अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी (या'नी ना'त शरीफ़ पढ़ना) और उन की शान का बयान करना, जश्ने विलादत मनाना

हमारे मुक़द्दर में आया। हम प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'तें पढ़ते सुनते और फ़ज़ाइल बयान करते हैं। खुदा की क़सम ! येह मुक़द्दर वालों का हिस्सा है, सब को येह नसीब नहीं होता। किसी शाइर ने कहा है :

मेरे आक़ा की मद्ह सराई अहले सुन्नत के हिस्से में आई
बिगड़ी आक़ा ने सब की बनाई हम भी क़िस्मत जगाए हुए हैं

एक और शाइर ने भी कहा है :

खुदा अहले सुन्नत को आबाद रख्खे मुहम्मद का मीलाद होता रहेगा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सब से बड़ी ने'मत

ऐ आशिक़ाने मीलादे मुस्तफ़ा ! अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की सब से बड़ी ने'मत हैं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम पर एह़साने इलाही हैं। हुज़ूर पुरनूर हैं, आप चमका देने वाला आफ़्ताब हैं। रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही नबियों के सरदार और **अल्लाह** पाक की रोशन दलील हैं। रब्बे रह़ीम व करीम की ऐसी अ़ज़मतो शान वाली रह़मतो ने'मत की आमद हो तो फिर हम इस अनमोल ने'मत पर क्यूं न खुशियां मनाएं। क्या हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बढ़ कर भी कोई **अल्लाह** पाक की रह़मत है ? और रह़मते खुदावन्दी पर खुशी मनाने का कुरआने करीम हुक्म दे रहा है, देखिये ! मुक़द्दस कुरआन में साफ़ साफ़ ए'लान है, **अल्लाह** पाक पारह 11 **सूरए यूनुस** की आयत नम्बर 58 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْاؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ۝۵۸﴾ **आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान**[1] : "तुम फ़रमाओ : **अल्लाह** के फ़ज़्ल और उस की रह़मत पर ही खुशी मनानी चाहिये, येह उस से बेहतर है जो वोह जम्अ़ करते हैं।"

1... इस रिसाले में शामिल तमाम कुरआनी आयात का तरजमा "कन्ज़ुल इरफ़ान" से लिया गया है।

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इस आयते मुबारक के तह़त फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि **अल्लाह** का फ़ज़्ल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं और **अल्लाह** की रह़मत क़ुरआने करीम। रब फ़रमाता है : ﴿وَ كَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْكَ عَظِیْمًا﴾ **तरजमा :** "और आप पर **अल्लाह** का फ़ज़्ल बहुत बड़ा है।" (پ5، النساء:113) और बा'ज़ ने फ़रमाया : **अल्लाह** का फ़ज़्ल क़ुरआन और रह़मत हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। रब फ़रमाता है : ﴿وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ﴾ **तरजमा :** "और हम ने तुम्हें तमाम जहानों के लिये रह़मत बना कर ही भेजा।" (پ17، الانبیاء:107)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि क़ुरआने मजीद के नुज़ूल के महीने या'नी रमज़ान में और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत के महीने या'नी रबीउ़ल अव्वल में ख़ुशी मनाना, इ़बादात करना बेहतर है क्यूं कि रब की रह़मत मिलने पर ख़ुशी करनी चाहिये और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो रब की बड़ी आ'ला ने'मत हैं, येह ख़ुशी रब की ने'मतों का शुक्रिय्या है। या'नी येह ख़ुशी मनाना दुन्या की तमाम ने'मतों से बेहतर है क्यूं कि येह ख़ुशी इ़बादत है जिस का सवाब बे ह़िसाब है। (नूरुल इ़रफ़ान, स. 342)

हर करम की वज्ह येह फ़ज़्ले अ़ज़ीम   सदक़ा हैं सब ने'मतें इस फ़ज़्ल का
फ़ज़्ल और फिर वोह भी ऐसा शानदार   जिस पे सब अफ़्ज़ाल का है ख़ातिमा

(ज़ौक़े ना'त, स. 313)

अल्लाह पाक के दिन

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! अल्लाह पाक पारह 13 **सूरए इब्राहीम** की आयत नम्बर 5 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَ ذَكِّرْهُمْ بِاَیّٰىمِ اللّٰهِ﴾ **तरजमा :** "और उन्हें **अल्लाह** के दिन याद दिलाओ।"

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا, ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ और अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम मुजाहिद

और ह़ज़रते क़तादा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡھِمَا ने इस आयते मुबारका में मौजूद "اَیَّامِ اللّٰہِ" या'नी **अल्लाह** पाक के दिन की तफ़्सीर "نِعَمُ اللّٰہِ" या'नी **अल्लाह** पाक की ने'मतों से की है। (تفسیر خازن، 3/75ملتقطاً)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रब की ने'मत हैं

यक़ीनन **अल्लाह** पाक की ने'मतें बे शुमार हैं, इन बे शुमार ने'मतों में से एक ने'मत **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका भी है चुनान्चे ह़दीसे पाक की सब से मशहूर और क़ाबिले ए'तिमाद किताब सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में है : **مُحَمَّدٌ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَ سَلَّمَ نِعۡمَۃُ اللّٰہِ** या'नी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की ने'मत हैं। (بخاری، 3/11، حدیث:3977)

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! हम कितने ख़ुश नसीब हैं कि **अल्लाह** पाक ने अपनी इस प्यारी ने'मत या'नी अपने प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दामने करम हमें अ़ता फ़रमाया और हमें इन की उम्मत में पैदा किया। आ़शिक़े रसूल का दिल तो कहता है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिर्फ़ ने'मत ही नहीं बल्कि **अल्लाह** पाक की सब से बड़ी ने'मत हैं, ख़ुदा की क़सम ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी हम पर **अल्लाह** पाक की सब से बड़ी ने'मत है, इस ने'मत के मुक़ाबले में कोई ने'मत नहीं है।

मीलाद शरीफ़ मनाना हुक्मे क़ुरआनी है

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की ने'मत और सब से बड़ी ने'मत हैं और ने'मत मिलने पर ख़ुशी का हुक्म हमें क़ुरआने करीम के पारह नम्बर 11 सूरए यूनुस की आयत नम्बर 58 में दिया गया है तो फिर **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस दिन दुन्या में तशरीफ़ लाए उस दिन हम ख़ुशी क्यूं न मनाएं। कोई भी आ़शिक़े रसूल इस का इन्कार नहीं करेगा, क्या सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने'मत नहीं हैं ? क्या प्यारे आक़ा

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दुन्या में तशरीफ़ लाना ने'मत नहीं है ?

कुरआने करीम में इर्शाद होता है : ﴿ وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴾

तरजमा : "और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चरचा करो ।" (پ30، سورۃ الضحٰی:11)

जब **अल्लाह** पाक अपनी दी हुई हर ने'मत के शुक्राने पर उस ने'मत का चरचा करने का इर्शाद फ़रमा रहा है तो इतनी बड़ी ने'मत कि जिस से बड़ी ने'मत तसव्वुर ही नहीं की जा सकती उस ने'मत का चरचा हम क्यूं न करें ? اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हम तो सारा साल ही ज़िक्रे ख़ैर करते हैं, सारा साल ही हमारे यहां मीलाद होते रहते हैं, हमारा कोई दर्सो बयान ऐसा नहीं होता जिस में ज़िक्रे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न हो ।

तुम भी कर के उन का चरचा अपने दिल चमकाओ ऊंचे में ऊंचा नबी का झन्डा घर घर में लहराओ

इस बात को दुन्यावी मिसाल से यूं समझ लीजिये कि जब हमारे हां बच्चा पैदा होता है तो हम ख़ुशी मनाते हैं, हमारा दिल ख़ुश होता है, लोग भी मुबारक बाद देते हैं, फिर हर साल सालगिरह (Birthday) मनाते हैं । कोई कुछ नहीं बोलता कि येह क्यूं मनाते हो और शैतान भी वस्वसा नहीं डालता लेकिन जब हम अपने आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत (Birth) की ख़ुशी मनाते हैं जिसे हम एक ख़ूब सूरत लफ़्ज़ "जश्ने विलादत" के साथ याद करते हैं तो इस पर बा'ज़ लोगों के कान में शैतान आ कर बोलता है कि येह कहां से साबित है, किस ने मनाया, क्या हुवा कैसे हुवा ? लिहाज़ा शैतानी वस्वसों में नहीं आना चाहिये ।

मीलाद शरीफ़ के सुबूत पर जो आयतें हैं उन्हें लिख कर मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़तावा रज़विय्या जिल्द 29 सफ़हा 250 पर इर्शाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** का कौन सा दिन इस नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ुहूरे पुरनूर (या'नी सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत, आप के पैदा होने) के दिन से बड़ा है ? तो बिला शुबा क़ुरआने करीम हमें हुक्म देता है कि नबिय्ये पाक

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते अक़्दस पर ख़ुशी करो।

(फ़तावा रज़विय्या, 29/250)

अपना यौमे विलादत ख़ुद मनाते

क्या आप को पता है कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर पीर (Monday) को अपना यौमे विलादत मनाते थे, इस त़रह़ कि हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रखते, आप से पूछा गया कि आप हर पीर को रोज़ा रख रहे हैं इस का सबब क्या है ? हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो अस्बाब इर्शाद फ़रमाए उन में से एक सबब (Reason) येह भी बयान फ़रमाया कि : فِيْهِ وُلِدْتُّ । या'नी इस दिन मैं पैदा हुवा। (مسلم، ص455، حدیث:2750)

आ़शिक़ाने मीलाद को भी चाहिये कि बारह रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के मौक़अ़ पर जश्ने विलादत मनाने के साथ साथ हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर भी प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की याद मनाया करें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अल्लाह पाक का बड़ा एह़सान

अल्लाह पाक पारह 4 **सूरए आले इ़मरान** की आयत नम्बर 164 में इर्शाद फ़रमाता है :

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ ۚ

तरजमा : ''बेशक **अल्लाह** ने ईमान वालों पर बड़ा एह़सान फ़रमाया जब उन में एक रसूल मब्ऊ़स फ़रमाया (या'नी भेजा) जो उन्ही में से है। वोह उन के सामने **अल्लाह** की आयतें तिलावत फ़रमाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और ह़िक्मत की ता'लीम देता है।''

www.dawateislami.net

ऐ आशिक़ाने मीलाद ! मिन्नत अ़ज़ीम ने'मत को कहते हैं। (सिरातुल जिनान, 2/87) **अल्लाह** पाक का येह बड़ा एह़सान है कि उस ने हमें अपने प्यारे प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामने करम अ़ता फ़रमा दिया, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने हमें बे शुमार ने'मतें अ़ता फ़रमाई हैं मगर किसी ने'मत पर येह इर्शाद नहीं फ़रमाया कि मैं ने येह ने'मत अ़ता फ़रमा कर तुम पर एह़सान किया लेकिन जब ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के लाल के दुन्या में तशरीफ़ लाने की बारी आई तो फ़रमाया **: अल्लाह** पाक ने मुसल्मानों पर बहुत बड़ा एह़सान फ़रमाया कि उन्हें अपना सब से अ़ज़ीम, सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला, सब से बड़ी अ़ज़मत वाला रसूल अ़ता फ़रमाया। बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में सलाम अ़र्ज़ करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

रब्बे आ'ला की ने'मत पे आ'ला दुरूद   ह़क़ तआ़ला की मिन्नत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 298)

शर्हे कलामे रज़ा : इस शे'र का ख़ुलासा येह है कि अ़ज़मतो बुलन्दी वाले **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की बड़ी ने'मत या'नी ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के लाल, रसूले बे मिसाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल, नबिय्ये बा कमाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर बड़े दुरूद, बड़ी रह़मतें नाज़िल हों क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की मिन्नत (या'नी बड़ा एह़सान) हैं और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर लाखों सलाम हों।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और मह़फ़िले मीलाद

बा'ज़ लोगों की त़रफ़ से यूं वस्वसा डाला जाता है कि क्या सह़ाबए किराम ने भी मीलाद मनाया है? इस वस्वसे को दूर करने के लिये एक बहुत प्यारी ह़दीसे पाक पढ़िये اِنْ شَآءَ الله आप पढ़ेंगे तो शैत़ान सर पीटता, रोता,

www.dawateislami.net

चीख़ता हुवा ना मुराद भाग जाएगा । ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की एक मह़फ़िल में तशरीफ़ लाए तो इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें किस चीज़ ने यहां बिठाया है ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : हम यहां इस लिये बैठे हैं कि हमें **अल्लाह** पाक ने दीने इस्लाम की जो दौलत अ़त़ा फ़रमाई है और आप को भेज कर हम पर जो एह़सान फ़रमाया है इस पर उस का ज़िक्र और शुक्र अदा करें । तो **अल्लाह** के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की क़सम ! क्या तुम सिर्फ़ इसी लिये बैठे हो ? अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक की क़सम ! हम सिर्फ़ इसी लिये बैठे हैं कि दीने इस्लाम की दौलत और आप के तशरीफ़ लाने की ने'मत और **अल्लाह** पाक के इस एह़सान पर **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा करें । तो **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम से क़सम इस लिये नहीं ले रहा कि मुझे तुम पर शक है बल्कि मेरे पास जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام आए और मुझे ख़बर दी कि तुम्हारे इस अ़मल पर **अल्लाह** पाक फ़िरिश्तों के सामने तुम पर फ़ख़्र फ़रमा रहा है । (نسائی،ص861،حدیث:5434)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन तमाम सह़ाबा पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

आप ने पढ़ा कि सह़ाबए किराम क्या कर रहे थे ? हिदायते इस्लाम और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की ने'मतों पर **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा कर रहे थे । हम जो मीलाद मनाते हैं तो हम **अल्लाह** पाक का शुक्र ही तो अदा करते हैं, उस के ह़बीब का ज़िक्रे ख़ैर करते हैं, क़ुरआन की आयतें पढ़ते हैं, दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं, ह़दीसें सुनाते हैं, सुन्नतें बताते हैं, हम जो मीलाद की मह़फ़िलें करते हैं उन में येही तो होता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِكَ

مَعَاذَاللّٰه ! अगर कहीं मीलाद शरीफ़ में ग़ैर शरई काम हों, ढोल बाजे हों, तो हम कभी भी इन की ताईद नहीं करते, इन का रद ही तो करते हैं।

जब तलक येह चांद तारे झिलमिलाते जाएंगे तब तलक जश्ने विलादत हम मनाते जाएंगे
नूर वाला आया है नूर ले कर आया है सारे आ़लम में येह देखो कैसा नूर छाया है

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत हमारी घुट्टी में है और रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का चांद देख कर मज़ीद ताज़ा हो जाती है, इस माहे मुबारक में रह़मतों की छमाछम बरसात होने लगती है, ज़ेह्न बना लीजिये कि दुन्या इधर की उधर हो जाए, हमारे दिल से कभी जश्ने विलादत नहीं निकलेगा बल्कि हमारी ज़बान पर ना'तें जारी होती रहेंगी और हम अपनी नस्लों को भी इस की तरग़ीब दिलाते रहेंगे।

मनाना जश्ने मीलादुन्नबी हरगिज़ न छोड़ेंगे
जुलूसे पाक में जाना कभी हरगिज़ न छोड़ेंगे

सरकार की आमद मरह़बा मन्ठार की आमद मरह़बा मुख़्तार की आमद मरह़बा
ग़म ख़्वार की आमद मरह़बा ताजदार की आमद मरह़बा शहे अबरार की आमद मरह़बा
आक़ा की आमद मरह़बा सरदार की आमद मरह़बा आक़ाए अ़त्तार की आमद मरह़बा
मरह़बा या मुस्त़फ़ा मरह़बा या मुस्त़फ़ा मरह़बा या मुस्त़फ़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

आमदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक ख़ास बरकत

आमदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक ख़ास बरकत है, क़ुरआने करीम की ख़िदमत में अ़र्ज़ करते हैं कि ऐ **अल्लाह** पाक के सच्चे कलाम तू ही हमें इर्शाद फ़रमा कि हमारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की ख़ास बरकत क्या है ? चुनान्चे पारह 9 **सूरतुल अन्फ़ाल** की आयत नम्बर 33 में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ﴾ **तरजमा :** "और **अल्लाह** की येह शान नहीं कि

www.dawateislami.net

इन्हें अ़ज़ाब दे जब तक ऐ ह़बीब ! तुम इन में तशरीफ़ फ़रमा हो।"

खुदा की क़सम ! येह बहुत बड़ी बरकत है, हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी तौर पर दुन्या में तशरीफ़ लाने से पहले पूरी पूरी क़ौमें ना फ़रमानियों की वज्ह से तबाह हो गईं, किसी को डुबो दिया गया, किसी को ज़मीन में धंसा दिया गया, किसी पर आस्मान से पथराव हुवा, अफ़्सोस ! आज गुनाहों की जहां तक बात करें तो कुफ़्रो शिर्क के इ़लावा तक़रीबन सारे गुनाह हम में पाए जा रहे हैं फिर भी ज़मीन हमें चलने दे रही है, आस्मान हम पर फट नहीं रहा, पथराव नहीं हो रहा, सारे डूब कर हलाक नहीं हो रहे। येह प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम में तशरीफ़ फ़रमा होने की दलील है कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम में तशरीफ़ फ़रमा हैं इस लिये सब हलाक नहीं हो रहे। **अल्लाह** पाक की रह़मत की क्या बात है !

इसी आयते मुबारका के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयते करीमा से चन्द फ़ाएदे ह़ासिल हुए :

पहला फ़ाएदा : "اَنۡتَ فِیۡہِمۡ" या'नी आप इन में तशरीफ़ फ़रमा हैं कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) दुन्या के लिये **अल्लाह** की रह़मत, **अल्लाह** की अमान (या'नी पनाह) हैं कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की वज्ह से दुन्या में आ़म अ़ज़ाबाते इलाही नहीं आते। मज़ीद फ़रमाते हैं : देखो जिन गुनाहों की वज्ह से गुज़श्ता क़ौमों पर अ़ज़ाबात आए वोह सब गुनाह बल्कि उन से ज़ियादा गुनाह आज हो रहे हैं मगर आस्मानी अ़ज़ाब नहीं आते क्यूं ? सिर्फ़ हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की मौजूदगी की वज्ह से कि येह हम में तशरीफ़ फ़रमा हैं।

दूसरा फ़ाएदा : हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर्दा फ़रमाने (या'नी वफ़ात शरीफ़) के बा'द भी हम में मौजूद हैं, तशरीफ़ फ़रमा हैं। हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का फ़ैज़ान आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की वफ़ात (इन्तिक़ाल

www.dawateislami.net

शरीफ़) से बन्द नहीं हुवा, अगर हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हम में एक आन (या'नी सेकन्ड भर) के लिये न रहें तो अ़ज़ाबे इलाही आ जाए। हम सिर्फ़ हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की वज्ह से, आप की बरकत से अ़ज़ाब से बचे हुए हैं, रब फ़रमाता है : ﴿وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ﴾ (**तरजमा :** और हम ने तुम्हें तमाम जहानों के लिये रह़मत बना कर ही भेजा) हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) रह़मतुल्लिल आ़लमीन हैं और रह़मत हम से क़रीब है, दुरूद हो उस पर जिस का वुजूदे बा जूद सरापा रह़मत है।

तीसरा फ़ाएदा : हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़ाते बा बरकात दुन्या में कुफ़्फ़ार के लिये भी रह़मत है कि वोह हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की वज्ह से अम्न में हैं फिर मुसल्मानों पर रह़मते रसूल का क्या पूछना।

(तफ़्सीरे नईमी, 9/542 ब तग़य्युर)

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी तौ़र पर दुन्या में तशरीफ़ लाने के बा'द से वाक़ेई ग़ैर मुस्लिमों पर भी इज्तिमाई अ़ज़ाब नहीं आया। पहले पूरी पूरी क़ौमें तबाह हो जातीं, उन के नामो निशान मिट जाते थे जिस के दलाइल कुरआनो अह़ादीस और तारीख़ी आसार में मौजूद हैं। वोह लोग ऐसे तरक़्क़ी याफ़्ता थे, इतने पावरफुल थे कि पथ्थर तराश कर पहाड़ों में मकानात बनाते थे और ऐसे ऐसे मकान बनाए जो आज भी क़ाइम हैं, उस वक़्त तो साइन्स का नामो निशान भी नहीं था।

ह़ालां कि साइन्स की तरक़्क़ी के बा'द अब जो मकान कंक्रीट के बन रहे हैं जिन्हें हम पक्का समझते हैं उन की इतनी लाइफ़ नहीं है, पिछली क़ौमों को **अल्लाह** पाक ने इतनी समझ बूझ दी थी लेकिन उन्हों ने सरकशी की, कुफ़्र किया और अपने नबी की बात नहीं मानी तो वोह तबाह कर दिये गए। आज के ग़ैर मुस्लिम भी सोचें कि चौदह पन्दरह सो साल से ऐसा अ़ज़ाब नहीं आया कि रूए ज़मीन से ग़ैर मुस्लिम ख़त्म हो

www.dawateislami.net

जाएं, ऐसा क्यूं नहीं हो रहा ? अगर कोई सोचे, दिल से ग़ौर करे तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत का क़ाइल हो जाए, कुरआन का क़ाइल हो जाए क्यूं कि कुरआने करीम ने फ़रमा दिया है जब तक आप मौजूद हैं तो इन सब के साथ इज्तिमाई तौ़र पर ऐसा कुछ नहीं होगा जैसा कि पहले इज्तिमाई तौ़र पर होता था।

वाक़ेई कुरआने करीम बड़ी अ़ज़मतों वाला कलाम है, आदमी इस में जितना ग़ौर करे, डीप में जाए उसे गहराई नहीं मिलती और इस में ग़ौर करने के लिये हमें उ़लमा का दामन पकड़ के उन के पीछे पीछे चलना है, उ़लमाए किराम इस की जितनी भी गहराई में जाएंगे वोह उसी क़दर मोती, गौहर, ला'ल लाएंगे।

उ़लमा जो फ़रमाएं हम वोही मानें अपनी अ़क़्ल के घोड़े न दौड़ाएं, जो आ़लिमे दीन होगा, इल्म को समझता होगा वोह मेरी बात की ताईद करेगा कि वाक़ेई ऐसा ही है, आज कल त़रह़ त़रह़ के प्रोफ़ेसर और लेक्चरार मुख़्तलिफ़ चेनल्ज़ पर आते और गुमराहियों के गढ़े खोद खोद कर उम्मत को उन में धकेल रहे होते हैं लिहाज़ा किसी की भी नहीं सुननी, सिर्फ़ उ़लमाए अहले सुन्नत की सुनें और मेरी इस बात को अपनी गिरह से बांध लें। नीज़ हमारे इमाम जिन को गुज़रे हुए तक़रीबन एक सदी से ज़ियादा अ़र्सा हो चुका है जिन को हम इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ कहते हैं, जो वाक़ेई उ़लमाए अहले सुन्नत हैं वोह इन को मानते और इन को फ़ॉलो करते हैं, इन के फ़तावा पर आंखें बन्द रखते हैं, इन की तह़क़ीक़ के सामने अपने क़लम तोड़ देते और इन की तह़क़ीक़ को ह़र्फ़े आख़िर समझते हैं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! मैं भी इन के दामन से वाबस्ता हूं, जो मुझ (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ) से मह़ब्बत करते हैं वोह भी वाबस्ता हैं और जो इन से वाबस्ता हैं वोह नहीं भटकेंगे اِنْ شَآءَ اللّٰہ। हम इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को इस लिये फ़ॉलो करते हैं कि इन्हों

www.dawateislami.net

ने **अल्लाह** व रसूल की बातें सहीह़ त़रीके़ से हम तक पहुंचाई हैं, कुरआने पाक की जो सहीह़ तफ़्सीर है वोह हम तक पहुंचाई है, ह़दीस की जो सहीह़ शुरूह़ात हैं वोह पहुंचाई हैं, शरीअ़त के जो सहीह़ मस्अले हैं वोह पहुंचाए हैं लिहाज़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ के दामने करम से वाबस्ता रहें तो दोनों जहां में बेड़ा पार होगा । اِنْ شَآءَاللہ

ऐसे जावेद मुबारक तुझे शैदाइये दोस्त اَنْتَ فِيْهِمْ ने अ़दू को भी लिया दामन में

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 63)

शर्हे कलामे रज़ा : कुरआने करीम में जो फ़रमाया गया "और **अल्लाह** की येह शान नहीं कि इन्हें अ़ज़ाब दे जब तक ऐ ह़बीब ! "तुम" इन में तशरीफ़ फ़रमा हो ।" (پ9،سورۃالانفال:33) **अल्लाह** पाक के इस फ़रमाने आ़लीशान ने नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से ग़ैर मुस्लिमों को भी दुन्या में इकठ्ठे अ़ज़ाब से बचा लिया, गोया **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आने से उन को भी ज़ाहिरी और आ़रिज़ी (Temporary) अमान (या'नी पनाह) मिल गई मगर क्या ख़ूब नसीब हैं उस आ़शिके़ रसूल के जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाया और **अल्लाह** पाक की रह़मत से हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदके़ में हमेशा के लिये अमान (पनाह) में आ गया, ऐसे आ़शिके़ सादिक़ को हमेशा की जन्नत की ज़िन्दगी मुबारक हो । क्यूं कि जो भी आ़शिके़ रसूल ईमान पर दुन्या से गया तो उस का ठिकाना जन्नत है, مَعَاذَاللہ ! अगर उसे किसी गुनाह की सज़ा हुई भी बिल आख़िर ईमान पर ख़ातिमे के सबब उस ने हमेशा जन्नत में ही रहना है । **अल्लाह** पाक हमें एक लम्ह़े के लिये भी अ़ज़ाब न दे, बे ह़िसाब बख़्श दे ।

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

(ज़ौके़ ना'त, स. 18)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

www.dawateislami.net

शैख़ैने करीमैन की शानो अ़ज़मत

मज़्कूरा आयते मुबारका के तह़त ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि सिद्दीक़े अक्बर, फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا) की क़ब्रों में अ़ज़ाब नहीं क्यूं कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उन के पास हैं और वोह आग़ोशे मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में आराम कर रहे हैं। जो इन्हें अ़ज़ाब में माने वोह इस आयत का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) है। (नूरुल इरफ़ान, स. 287)

हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! हमारा अ़क़ीदा है कि हर सह़ाबी आ़दिल है कोई भी फ़ासिक़ नहीं, बहारे शरीअ़त में है कि हर सह़ाबी जन्नती है। (बहारे शरीअ़त, 1/254)

हर सह़ाबिये नबी	*जन्नती जन्नती*	*फ़ात़िमा और अ़ली*	*जन्नती जन्नती*
ह़ज़रते सिद्दीक़ भी	*जन्नती जन्नती*	*हर ज़ौजए नबी*	*जन्नती जन्नती*
और उ़मर फ़ारूक़ भी	*जन्नती जन्नती*	*वालिदैने नबी*	*जन्नती जन्नती*
उ़स्माने ग़नी	*जन्नती जन्नती*	*ह़ज़रते मुआ़विया*	*जन्नती जन्नती*
और अबू सुफ़्यान भी	*जन्नती जन्नती*		

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अल्लाह पाक ने तमाम अम्बिया से वा'दा लिया

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! अल्लाह पाक पारह 3 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 81 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ النَّبِیّٖنَ لَمَاۤ اٰتَیْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّ حِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَ لَتَنْصُرُنَّهٗؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَ اَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِیْؕ

www.dawateislami.net

قَالُوْۤا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَ اَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۸۱﴾

तरजमा : और याद करो जब **अल्लाह** ने नबियों से वा'दा लिया कि मैं तुम्हें किताब और हिक्मत अ़ता करूंगा फिर तुम्हारे पास वोह अ़ज़्मत वाला रसूल तशरीफ़ लाएगा जो तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला होगा तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना। (**अल्लाह** ने) फ़रमाया : (ऐ अम्बिया !) क्या तुम ने (इस हुक्म का) इक़रार कर लिया और इस (इक़रार) पर मेरा भारी ज़िम्मा ले लिया ? सब ने अ़र्ज़ की : "हम ने इक़रार कर लिया" (**अल्लाह** ने) फ़रमाया : तो (अब) एक दूसरे पर (भी) गवाह बन जाओ और मैं खुद (भी) तुम्हारे साथ गवाहों में से हूं।

सारे नबियों के नबी

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام और उन के बा'द जिस किसी नबी को नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई उन से सय्यिदुल अम्बिया, मुह़म्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ अ़ह्द (Promise) लिया और उन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام ने अपनी क़ौमों से अ़ह्द (या'नी Promise) लिया कि अगर उन की ह़यात (या'नी ज़िन्दगी) में हुज़ूरे पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाएं तो वोह हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाएं और हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मदद करें।

(تفسیر خازن، 1/267، 268)

नबिय्यों में हो तुम ऐसे नबिय्युल अम्बिया तुम हो　　हसीनों में तुम ऐसे हो कि महबूबे ख़ुदा तुम हो

(सामाने बख़्शिश, स. 164)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

सब से पहले और सब से आख़िरी नबी

बहारे शरीअ़त के मुसन्निफ़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ कुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका

www.dawateislami.net

की रोशनी में फ़रमाते हैं : सब से पहले मर्तबए नुबुव्वत हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को मिला। रोज़े मीसाक़ (या'नी वा'दा लेने के दिन) तमाम अम्बिया से हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर ईमान लाने और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मदद करने का अ़हद लिया गया और इसी शर्त़ पर येह मन्सबे आ'ज़म (या'नी अ़ज़ीमुश्शान ओ़हदा) उन को दिया गया। हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) नबिय्युल अम्बिया (या'नी नबियों के भी नबी) हैं और तमाम अम्बिया हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के उम्मती, सब ने अपने अपने अ़हदे करीम (या'नी अपने मुबारक दौर और मुबारक ज़माने में) हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की नियाबत (या'नी नाइब होने की हैसिय्यत) में काम किया। (बहारे शरीअ़त, 1/85)

ताजदारे अम्बिया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा राज़दारे किब्रिया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा
आ गए ख़ैरुल वरा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा आए शाहे अम्बिया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा
मज़्हरे रब्बुल उ़ला, अह्लंव व सह्लन मरह़बा मुस्त़फ़ा व मुज्तबा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा
पेशवाए अम्बिया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा मुर्सलीं के मुक़्तदा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

(वसाइले बख़्शिश, स. 145)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सब नबियों से ह़ल्फ़ लिया गया

तीन सो साल से भी पहले के बुज़ुर्ग ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी दमिश्क़ी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 1143 हि.) लिखते हैं : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से अ़हद (या'नी Promise) लेने की वज्ह येह थी कि वोह जान लें कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन सब से पहले और उन सब के नबी व रसूल हैं और येह अ़हद लेना ख़लीफ़ा बनाने के मा'ना में है, इसी लिये ﴿لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَ لَتَنْصُرُنَّهٗ﴾ (या'नी तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना।) में दोनों जगह पर "लामे क़सम" दाख़िल है जिस में एक इन्तिहाई बारीक नुक्ता येह है कि गोया येह अ़हद उस बैअ़त का ह़ल्फ़ उठाना है जो ख़ुलफ़ा से लिया जाता है। हो सकता

www.dawateislami.net

है इस अ़ह्द के ज़रीए़ तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْھِمُ السَّلَام से आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा होने का ह़ल्फ़ लिया गया हो।

ऐ बन्दे ! अल्लाह पाक की त़रफ़ से हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दी जाने वाली इस अ़ज़मतो रिफ़्अ़त को पहचान और जब येह जान लिया तो तुझे येह भी मा'लूम हो गया कि ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नबियों के भी नबी हैं। आख़िरत में इस का इज़्हार तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْھِمُ السَّلَام के हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के झन्डे तले जम्अ़ होते ही होगा जैसा कि दुन्या में इस का इज़्हार मे'राज की रात हुवा जब हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْھِمُ السَّلَام को नमाज़ पढ़ाई। (حدیقہ ندیہ، ص94ملخصاً)

ह़श्र में ज़ेरे लिवाए ह़म्द ऐ अ़त्तार हम   ना'ते सुल्त़ाने मदीना गुनगुनाते जाएंगे

(वसाइले बख़्शिश, स. 419)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सब से बढ़ कर शान वाले

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत बयान करते हुए साढ़े सात सो साल पहले के बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद शरफ़ुद्दीन बूसैरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ (एक रिवायत के मुत़ाबिक़ वफ़ात : 694 हि.) ने अपने क़सीदए बुर्दा शरीफ़ में जो कुछ फ़रमाया है उस का नज़्म के साथ किसी ने यूं तरजमा किया है :

जो शरफ़ चाहो करो मन्सूब उस की ज़ात से   कोई अ़ज़मत क्यूं न हो है मन्ज़िलत से उस की कम

ह़द नहीं रखती फ़ज़ीलत कुछ रसूलुल्लाह की   लब कुशाई क्या करें अहले अ़रब अहले अ़जम

(सीरते रसूले अ़रबी, स. 551)

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रत मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने भी क्या ख़ूब कहा है :

ख़ुदा कहते नहीं बनती जुदा कहते नहीं बनती   ख़ुदा पर इस को छोड़ा है वोही जाने कि क्या तुम हो

(बयाज़े पाक, स. 15)

सब ह़सीनों से बढ़ कर के तुम हो ह़सीं   दोनों आ़लम में कोई भी तुम सा नहीं

तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम   क़ासिमे रिज़्के़ रब्बुल उ़ला हो तुम्हीं

(वसाइले बख़्शिश, स. 603)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

आमदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शुरूअ़ ही से धूम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا रिवायत करते हैं : **अल्लाह** पाक हमेशा अपने प्यारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और उन के बा'द सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से तशरीफ़ लाने का फ़रमाता रहा और क़दीम (शुरूअ़) से सब उम्मतें हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की ख़ुशियां मनातीं और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से अपने दुश्मनों पर फ़त्ह़ मांगती आईं यहां तक कि **अल्लाह** पाक ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बेहतरीन उम्मत, बेहतरीन ज़माने व बेहतरीन अस्ह़ाब और बेहतरीन शहर में ज़ाहिर फ़रमाया।

(الخصائص الکبریٰ، 1/ 8، 9)

तुम्हारी पैरवी का अ़हदो पैमां या रसूलल्लाह   लिया था रोज़े मीसाक़ अम्बिया से ह़क़ तआ़ला ने

(क़बालए बख़्शिश, स. 226)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

चौदह सो नामे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! **अल्लाह** करीम के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बे शुमार फ़ज़ाइलो कमालात हैं और आप के मुबारक नाम बहुत सारे हैं।

www.dawateislami.net

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अ़लमे ज़ात (ज़ाती नाम) दो हैं : कुतुबे साबिक़ा (या'नी पिछली किताबों) में "अह़मद" और कुरआने करीम में "मुह़म्मद" صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है और हुज़ूरे पाक (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सिफ़ाती नाम बहुत सारे हैं हम गिन नहीं सकते । अ़ल्लामा अह़मद ख़त़ीब क़स्त़लानी (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) ने सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पांच सो नाम जम्अ़ फ़रमाए हैं । (مواہب لدنیہ، 1/366 ملخصًا) "सीरते शामी" में तीन सो का मज़ीद इज़ाफ़ा है यूं हो गए आठ सो और मैं (या'नी आ'ला ह़ज़रत) ने छे सो और मिलाए, कुल चौदह सो 1400 हुए और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अस्मा (या'नी मुबारक नाम) हर त़बक़े में मुख़्तलिफ़ हैं और हर हर जिन्स में जुदागाना हैं, दरिया में और नाम हैं पहाड़ों में और । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 92) سُبْحٰنَ الله ! आ'ला ह़ज़रत की इल्मी लियाक़त देखें ।

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक नाम हर ज़बान में पाए जाते हैं, सिन्धी में कुछ तो पंजाबी में कुछ और, इस लिये नामों का शुमार हमारे लिये मुम्किन नहीं । रब को सब ख़बर है येह भी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत का एक बाब है ।

मौलाना जमीलुर्रह़मान रज़वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه क़बालए बख़्शिश में फ़रमाते हैं :

किसी जा है त़ाहा व यासीं कहीं पर   लक़ब है सिराजम्मुनीरा तुम्हारा

(क़बालए बख़्शिश, स. 30)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

आफ़्ताबे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ऐ आशिक़ाने मीलाद ! ख़ुदाए अ़ज़ीम ने कुरआने करीम में अपने प्यारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कई प्यारे प्यारे नामों से याद फ़रमाया

www.dawateislami.net

है जैसा कि पारह 22 **सूरतुल अह़्ज़ाब** आयत नम्बर 45 और 46 में इर्शाद होता है :

يَآيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ﴿٤٥﴾ وَّ دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٦﴾

तरजमा : ऐ नबी ! बेशक हम ने तुम्हें गवाह और ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला और **अल्लाह** की त़रफ़ उस के हुक्म से बुलाने वाला और चमका देने वाला आफ़्ताब बना कर भेजा ।

इन आयाते मुबारका में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक नाम नहीं बल्कि नामों की लिस्ट है। ﴿1﴾ नबी ﴿2﴾ शाहिद ﴿3﴾ मुबश्शिर ﴿4﴾ नज़ीर ﴿5﴾ दाई इलल्लाह ﴿6﴾ सिराजम्मुनीरा

येह दोनों आयात एक त़रह़ से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामों पर मुश्तमिल हैं।

786 साल पहले के बुज़ुर्गों की तफ़्सीर

तक़रीबन 786 साल पहले के बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इ़ज़्ज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 660 हि.) के ह़वाले से ''ह़दीक़ए नदिय्या'' में ''सिराजम्मुनीरा या'नी चमका देने वाला आफ़्ताब'' के तह़्त लिखा है : ''सिराज का मा'ना येह है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से वाज़ेह़ व ज़ाहिर हुज्जत (या'नी बिल्कुल खुली साफ़ दलील) हैं।'' (حدیقہ ندیہ، 240/1)

786 बड़ा प्यारा अ़दद है। दर अस्ल इ़ल्मुल आ'दाद के ह़िसाब से ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم'' के 786 अ़दद बनते हैं, इ़ल्मुल आ'दाद एक इ़ल्म है, आप ने ता'वीज़ात वग़ैरा में सात सो छियासी लिखा देखा होगा अलबत्ता 786 लिखने या पढ़ने से पूरी बिस्मिल्लाह लिखने और पढ़ने का सवाब नहीं मिलेगा।

तक़्रीबन 760 साल पहले के बुज़ुर्ग जो बहुत बड़े मश्हूर मुफ़स्सिर गुज़रे हैं और सभी उ़लमा इन को जानते और इन से वाक़िफ़ होंगे और वोह बुज़ुर्ग हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर नासिरुद्दीन बैज़ावी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ (वफ़ात : 685 हि.), येह अपनी मश्हूर तफ़्सीर "तफ़्सीरे बैज़ावी" में फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "सिराजे मुनीर" हैं कि जहालत के अंधेरों में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सबब रोशनी ह़ासिल की जाती है और फ़हमो फ़िरासत के अन्वार हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर ही से फ़ैज़याब होते हैं । (تفسیر بیضاوی، 4/379)

चमक से अपनी जहां जगमगाने आए हैं महक से अपनी येह कूचे बसाने आए हैं
सह़र को नूर जो चमका तो शाम तक चमका बता दिया कि जहां जगमगाने आए हैं

(सामाने बख़्शिश, स. 138)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

सारी काएनात को जगमग जगमग कर देने वाले

वालिदे आ'ला ह़ज़रत, अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ सूरज का नूर तमाम आ़लम में मुह़ीत़ (या'नी सारी दुन्या को घेरे हुए) है इसी त़रह़ सारा जहान आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के नूर से मुनव्वर (या'नी रोशन) है और जिस त़रह़ ख़ुदाए तआ़ला ने सितारों को मुसाफ़िरों की रहनुमाई के वासिते़ बनाया और आफ़्ताब (या'नी सूरज) को इस बात में उन से मुमताज़ (या'नी नुमायां) फ़रमाया इसी त़रह़ अम्बिया عَلَیۡہِمُ السَّلَام को गुमराहों की हिदायत के वासिते़ भेजा और हमारे ह़ज़रत (मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को इस बात में और तमाम फ़ज़ाइलो कमालात में उन (या'नी तमाम अम्बियाओ रुसुल عَلَیۡہِمُ السَّلَام) से अफ़्ज़लो अक्मल किया ।

(سرور القلوب بذکر المحبوب، ص110)

आंखें ठन्डी हों जिगर ताज़े हों जानें सैराब
सच्चे सूरज वोह दिलआरा है उजाला तेरा

शर्हे कलामे रज़ा : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते रहे हैं : ऐ सच्चे सूरज, मेरे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप का दीदार ऐसा दिलों को जीत लेने वाला और रोशन करने वाला है कि इस दीदारे ज़ियाबार (रोशनी देने वाले) से आंखें ठन्डी होतीं, जिगर ताज़ा होते और प्यासी जानों की प्यास बुझ जाती है।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत के शहज़ादए गिरामी हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه भी इस बात को कितने ख़ूब सूरत अन्दाज़ से बयान फ़रमाते हैं :

निगाहे मेहर जो उस मेहर की इधर हो जाए गुनह के दाग़ मिटें दिल मेरा क़मर हो जाए
जो क़ल्बे तीरह पे तेरी कभी नज़र हो जाए तो एक नूर का बुक़्आ वोह सर बसर हो जाए

(सामाने बख़्शिश, स. 187)

या'नी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे करम मुझ पर हो जाए तो मेरे गुनह के दाग़ मिट जाएं और मेरा दिल चमक्ता चांद हो जाए। **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जो मेरे अंधेरे दिल पर आप की नज़र हो जाए तो वोह सारे का सारा नूर का गुच्छा (या'नी सरापा नूर) हो जाए।

سُبْحٰنَ الله ! येह आ़शिक़े रसूल के जज़्बात, एह़सासात और कमाल तख़य्युलात हैं। **अल्लाह** पाक इन पर करोड़ों रह़मतें नाज़िल फ़रमाए कि इन के अश्आ़र से भी ईमान बड़ा ताज़ा होता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

अ़ज़मत के सूरज

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद शरफ़ुद्दीन बूसैरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बहुत मश्हूर बुज़ुर्ग हैं, आप का "क़सीदए बुर्दा" दुन्या में जिस क़दर मक़्बूल है इतनी मक़्बूलिय्यत किसी और क़सीदे को ह़ासिल नहीं हुई। दुन्या में मुख़्तलिफ़ ज़बानों वाले लोग इसे पढ़ते हैं बिल ख़ुसूस अ़रब दुन्या में येह क़सीदा बहुत पढ़ा जाता

www.dawateislami.net

है। इमाम बूसैरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ क़सीदए बुर्दा शरीफ़ में सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान यूं बयान करते हैं :

فَاِنَّهٗ شَمْسُ فَضْلٍ هُمْ كَوَاكِبُهَا
يُظْهِرْنَ اَنْوَارَهَا لِلنَّاسِ فِي الظُّلَمِ

या'नी वोह महबूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अज़्मत के रोशन आफ़्ताब हैं और बक़िय्या सारे अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام आप के चमक्ते सितारे हैं कि सब ने आप का नूर ले कर अंधेरे में रहने वाले लोगों पर ज़ाहिर किया। (قصیدۃ البردہ مع عصیدۃ الشہدۃ، ص154)

हज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ अ़र्ज़ करते हैं :

يَا صَاحِبَ الْجَمَالِ وَ يَا سَيِّدَ الْبَشَرْ مِنْ وَّجْهِكَ الْمُنِيْرِ لَقَدْ نُوِّرَ الْقَمَرْ
لَا يُمْكِنُ الثَّنَآءُ كَمَا كَانَ حَقُّهٗ بَعْد اَزْ خُدا بُزُرگ تُوئی قِصَّهْ مُخْتَصَر

(कमालाते अ़ज़ीज़ी, ह़ालाते अ़ज़ीज़ी, स. 34)

या'नी ऐ हुस्नो जमाल वाले, ऐ सारे इन्सानों के सरदार ! आप के रोशन चेहरए मुबारक से रोशनी ले कर चांद चमक रहा है। ऐ **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम से येह मुम्किन ही नहीं कि आप की शान ऐसी बयान कर सकें जिस त़रह़ बयान करने का ह़क़ है, हम बस इतना जानते हैं कि **अल्लाह** पाक के बा'द अगर कोई अफ़्ज़ल तरीन है तो वोह आप की ज़ात है और सारी मख़्लूक़ में सिर्फ़ आप की ज़ात ही सब से अफ़्ज़ल है।

ज़िन्दगियां ख़त्म हुईं और क़लम टूट गए पर तेरे औसाफ़ का इक बाब भी पूरा न हुवा

उठा दो पर्दा दिखा दो चेहरा कि नूरे बारी ह़िजाब में है

ज़माना तारीक हो रहा है कि मेह्र कब से निक़ाब में है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 180)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सारी मख़्लूक़ के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त पारह 6 **सूरतुन्निसाअ** की आयत नम्बर 170 में इर्शाद फ़रमाता है :

﴿ يَاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ ﴾ **तरजमा :** ''ऐ लोगो ! तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हारे पास येह रसूल ह़क़ के साथ तशरीफ़ लाए''

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आयते मुबारका के इस हिस्से ''يَاَيُّهَا النَّاسُ'' या'नी ऐ लोगो ! की तफ़्सीर में लिखते हैं : जिस के मत़लब की बात कही जावे उस को पुकारा जाता है। त़बीब (मसलन डॉक्टर) बीमारों से कहता है : ऐ बीमारो ! येह दवा बड़ी मुफ़ीद है। कोई आ़लिम किसी किताब का ए'लान करता है तो कहता है : ऐ त़ालिबे इ़ल्मो ! इ़ल्म के शौक़ीन लोगो ! येह किताब बड़ी शानदार है। चूंकि रब तआ़ला इस आयते करीमा में हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मीलादे पाक का ए'लान फ़रमा रहा है और आप की विलादते पाक तो सारे जहां और सारे इन्सानों के लिये मुफ़ीद (या'नी फ़ाएदे मन्द) है लिहाज़ा किसी ख़ास गुरौह को नहीं पुकारा बल्कि ''يَاَيُّهَا النَّاسُ'' कह कर सारे लोगों को पुकारा। येह पुकारना हुज़ूर की नुबुव्वते आ़म्मा (या'नी सब का नबी होने) की दलील है। अगर्चे हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सारी मख़्लूक़ जिन्नो इन्स, फ़िरिश्तों वग़ैरहुम के नबी हैं। ख़ुद एक ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमाया : اُرْسِلْتُ اِلَى الْخَلْقِ كَآفَّةً या'नी मैं तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ भेजा गया हूं। (مسلم، ص266، حدیث:523) मगर चूंकि इन्सान अस्ल मक़्सूद हैं, दूसरी मख़्लूक़ ताबेअ़। इस लिये सिर्फ़ इन्सानों को पुकारा। ख़याल रहे कि इस ''النَّاسُ'' या'नी इन्सान में सिर्फ़ उस ज़माने के इन्सानों से ही ख़ित़ाब नहीं बल्कि क़ियामत तक के सारे इन्सानों को पुकारा गया। क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाना सारे इन्सानों पर लाज़िम है। तफ़्सीरे जलालैन शरीफ़ के ह़ाशिये सावी शरीफ़ में भी लिखा है कि येह ''ए'लान सब को आ़म है।''

मज़ीद कुछ आगे चल कर मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं : हमारे दुन्या

www.dawateislami.net

में आने को "ख़ल्क़" या "विलादत" कहा जाता है मगर हुज़ूरे पाक (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तशरीफ़ आवरी को रब तआ़ला ने جَاءَ، بَعَثَ، اَرْسَلَ (या'नी तशरीफ़ लाए, भेजा) के अल्फ़ाज़ से बयान फ़रमाया, यहां फ़रमाया "قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ", दूसरी जगह फ़रमाया "اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا" (**तरजमा :** उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा), एक जगह फ़रमाया "اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا" (**तरजमा :** हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर) क्यूं कि हम दुन्या में आने से पहले कुछ न थे, जो कुछ बने यहां आ कर बने मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब कुछ बन कर यहां तशरीफ़ ले आए। हम यहां बनने को आए वोह या'नी हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब कुछ बन कर दूसरों को बनाने के लिये तशरीफ़ लाए नीज़ हम यहां अपने काम के लिये आए कि यहां आ'माल कमा कर अपनी आख़िरत संभाल लें मगर हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) रब के काम के लिये आए उस की मख़्लूक़ की इस्लाह़ करें। सब एक ख़ास वक़्त के लिये आते हैं (मगर) हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमेशा के लिये तशरीफ़ ले आए वोह ऐसे आए कि बा'दे वफ़ाते ज़ाहिरी भी न गए इस लिये "جَآءَكُمْ" फ़रमाया गया। या'नी ऐ क़ियामत तक के इन्सानो ! वोह तुम सब के पास आए और ऐसे आए कि आ कर तुम्हारे पास से न गए। ख़याल रहे कि हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की विलादत अ़रब में है, रिहाइश मक्का मदीना में है मगर तशरीफ़ आवरी सारे जहान में है। जैसे सूरज रहता है आस्मान पर मगर चमकता है सारे जहान पर कि सारे जहान का निज़ाम इस से वाबस्ता है। ऐसे ही निज़ामे काएनात अ़र्शो फ़र्श का निज़ाम हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दम से वाबस्ता है। येह मह़बूब ख़ल्क़त (या'नी मख़्लूक़) के लिये रब्बे आ'ला का तोह़फ़ा बन कर आए इस लिये "مِنْ رَّبِّكُمْ या'नी तुम्हारे रब की त़रफ़ से" इर्शाद हुवा।

किसी ने कहा है :

ख़ल्क़ में सब से तू बड़ा तुझ से बड़ी ख़ुदा की ज़ात
क़ाइम है तेरी ज़ात से सारा निज़ामे काएनात

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीलाद शरीफ़ बयान करना अल्लाह पाक की सुन्नत है

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान साहिब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मजीद फ़रमाते हैं : इस आयते करीमा से चन्द फ़ाएदे हासिल हुए। **पहला फ़ाएदा :** हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मीलाद शरीफ़ बयान करना सुन्नते इलाहिय्यह है। **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया कि तुम्हारे पास आया, (कहीं फ़रमाया :) भेजा गया, येह सब मीलाद ही के बयान के अन्दाज़ हैं। मीलाद एक मश्हूर लफ़्ज़ है, विलादत का ज़िक्रे ख़ैर किया तो मीलाद, मो'जिज़ात का तज़्किरा किया तो मीलाद, शाने मुस्तफ़ा बयान की तो हमारे यहां इन सब को मीलाद कहते हैं। देखो रब तआला ने इस आयते करीमा में अपने महबूब का मीलादे पाक बयान किया और बहुत सी आयात में आप का मीलाद शरीफ़ मज़्कूर है या'नी बयान किया गया है। कुरआने मजीद ने बयान फ़रमाया कि हज़राते अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) भी अपनी क़ौम के सामने हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मीलाद शरीफ़ पढ़ते थे। हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : ﴿ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ یَّاْتِیْ مِنْۢ بَعْدِی اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ﴾ **तरजमा :** "और उस अज़ीम रसूल की बिशारत देने वाला हूं जो मेरे बा'द तशरीफ़ लाएंगे उन का नाम अहमद है।"

येह ज़िक्रे मीलाद ही तो है, जिस को समझ न हो वोही इन्कार करेगा। अल ग़रज़ मीलादे पाक सुन्नते इलाही भी है और सुन्नते अम्बियाए किराम भी। **दूसरा फ़ाएदा :** हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सारी ख़ुदाई (या'नी मख़्लूक़) के दाइमी (या'नी हमेशा के लिये) रसूल हैं। किसी ख़ास क़ौम, ख़ास मुल्क, ख़ास वक़्त के लिये नहीं। (तफ़्सीरे नईमी, 6/115 ता 120 ब तग़य्युर)

एक शाइर ने क्या ख़ूब कहा है :

www.dawateislami.net

तजल्लियों के कफ़ील तुम हो
मुरादे क़ल्बे ख़लील तुम हो
ख़ुदा की रोशन दलील तुम हो
येह सब तुम्हारी ही रोशनी है
अ़मल की मेरे असास क्या है
बजुज़ नदामत के पास क्या है
रहे सलामत तुम्हारी निस्बत
मेरा तो इक आसरा येही है
अ़ता किया मुझ को दर्दे उल्फ़त
कहां थी येह पुर ख़ता की क़िस्मत
मैं इस करम के कहां था क़ाबिल
हुज़ूर की बन्दा परवरी है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

दोनों जहान के लिये रह़मत

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! **अल्लाह** पाक पारह 17 **सूरए अम्बियाअ** की आयत नम्बर 107 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴾ **तरजमा :** "और हम ने तुम्हें तमाम जहानों के लिये रह़मत बना कर ही भेजा।"

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नबियों, रसूलों और फ़िरिश्तों عَلَيْهِمُ السَّلَام के लिये दीनो दुन्या में रह़मत हैं, जिन्नात और इन्सानों, मुसल्मान व ग़ैर मुस्लिम, ह़ैवानात, नबातात और जमादात (जैसे धात, पथ्थर, पहाड़) सब के लिये रह़मत हैं अल ग़रज़ काएनात में जितनी अश्या हैं सब की सब **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रह़मत से मुस्तफ़ीज़ हैं, रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन सब के लिये रह़मत हैं। सवा आठ सो साल पहले के अ़ज़ीम मुफ़स्सिर बुज़ुर्ग इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 606 हि.) फ़रमाते हैं : "जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम आ़लमीन के लिये रह़मत हैं तो लाज़िम हुवा कि वोह (**अल्लाह** पाक के सिवा जितनी भी मख़्लूक़ हैं) सब से अफ़्ज़ल हों।" (تفسیر کبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ:253، 2/521)

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैज़ावी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सारे जहान के लिये रह़मत होने का मा'ना येह है कि जो कुछ रहमते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ले कर तशरीफ़ लाए हैं येह तमाम जहान के लोगों के लिये सआ़दत और उन की ज़िन्दगी व आख़िरत की बेहतरी के लिये लाज़िम है। (تفسیرِ بیضاوی، پ17، الانبیاء، تحت الآیۃ: 107، 4/111) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه ने बारगाहे रिसालत में क्या ख़ूब नज़रानए अ़क़ीदत पेश किया है कि सिर्फ़ रह़मत ही नहीं बल्कि जाने रह़मत कह कर अ़र्ज़ किया है :

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम   शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 295)

शर्हे कलामे रज़ा : ऐ मेरे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप फ़क़त़ रह़मत ही नहीं बल्कि रह़मत की भी जान और रह़मत की भी अस्ल और बुन्याद हैं, आप पर लाखों सलाम हों। आप अम्बियाए किराम व रुसुले इ़ज़ाम عَلَيْهِمُ السَّلَام की मह़फ़िल की जगमगाती, नूर बरसाती रोशन शम्अ़ हैं, आप पर लाखों सलाम हों।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

रह़मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ैर मुस्लिमों पर भी

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रह़मत होना आ़म है, ईमान वाले के लिये भी और उस के लिये भी जो ईमान न लाया। मोमिन के लिये तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या व आख़िरत दोनों में रह़मत हैं और जो ईमान न लाया उस के लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या में रह़मत हैं कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बदौलत उस के दुन्यवी अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र

कर दिया गया या'नी लेट कर दिया गया और उस से ज़मीन में धंसाने का अ़ज़ाब, शक्लें बिगाड़ देने का अ़ज़ाब और जड़ से उखाड़ देने का अ़ज़ाब उठा दिया गया। (تفسیر خازن،الانبیاء، تحت الآیۃ:107، 3/297)

पहले ग़ैर मुस्लिमों की पूरी पूरी क़ौमें ज़मीन में धंसा दी जातीं या समुन्दर में डुबो दी जातीं अब ऐसा नहीं होगा, येह भी उन पर रह़मत है कि किसी त़रह़ येह ईमान ले आएं और ह़क़ीक़त में दामने रह़मत में आ जाएं।

क़ासिमे ने'मत, नबिय्ये रह़मत

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बड़े बड़े उ़लमा, बड़े बड़े औलियाए किराम फ़रमाते हैं कि "अज़ल से अबद तक, अर्ज़ो समा (या'नी ज़मीनो आस्मान) में, ऊला व आख़िरत में, दीनो दुन्या में, रूह़ व जिस्म में, छोटी या बड़ी, बहुत या थोड़ी, जो ने'मतो दौलत किसी को मिली या अब मिलती है या आइन्दा मिलेगी सब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे जहां पनाह से बटी और बटती है और हमेशा Ï¢Äx¢ J' (फ़तावा रज़विय्या, रिसाला : तजल्लियुल यक़ीन, 30/141)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

لَا وَرَبِّ الْعَرْش जिस को जो मिला उन से मिला बटती है कौनैन में ने'मत रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 152)

शर्हे कलामे रज़ा : لَا وَرَبِّ الْعَرْش या'नी अ़र्श के रब की क़सम ! काएनात में जिस को जो भी ने'मतो बरकत ह़ासिल हुई वोह सब रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सदक़ा है क्यूं कि दुन्या व आख़िरत की हर ने'मत, नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तक़्सीम व इजाज़त से मिलती है, रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ासिमे ने'मत या'नी ने'मतें तक़्सीम फ़रमाने वाले हैं जैसा कि ख़ुद फ़रमाते हैं : اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَاللّٰہُ یُعْطِی या'नी मैं तक़्सीम करने वाला हूं और **अल्लाह** पाक अ़त़ा फ़रमाता है। (بخاری،1/43،حدیث:71)

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

रब है मो'त़ी, येह हैं क़ासिम रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं
ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा पीते हम हैं, पिलाते येह हैं
नज़्अ़ रूह़ में आसानी दें कलिमा याद दिलाते येह हैं
मरक़द में बन्दों को थपक के मीठी नींद सुलाते येह हैं
कह दो रज़ा से ख़ुश हो ख़ुश रह मुज़्दा रिज़ा का सुनाते येह हैं

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की शाइ़री

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की शाइ़री आ़म शाइ़रों की त़रह़ नहीं थी क्यूं कि आप बहुत बड़े मुफ़स्सिरे कुरआन, ज़बर दस्त मुह़द्दिस, बहुत बड़े मुफ़्तिये इस्लाम और बहुत ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल और **अल्लाह** पाक के मक़्बूल वली हैं। आप की शाइ़री ऐ़न कुरआनो ह़दीस के मुत़ाबिक़ है, आप के अश्आ़र में कहीं कुरआनी आयात का बयान है तो कहीं अह़ादीसे मुबारका की तश्रीह़ और कहीं औलियाए किराम, उ़लमाए किराम, बुज़ुर्गाने दीन, आ़रिफ़ीन, सालिह़ीन, सूफ़ियाए किराम के अक़्वाल की झल्कियां। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से इ़श्क़े रसूल का जो जाम सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने दुन्या भर में आ़म फ़रमाया है, आज भी अगर कोई उस जामे मह़ब्बत को अ़क़ीदतो मह़ब्बत से पिये तो फिर वोह भी झूम झूम कर पुकारेगा :

रह़मते परवर्दगार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा या शहे आ़ली वक़ार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा
ऐ ख़ुदा के शाहकार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा सब पुकारो बार बार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

या अल्लाह पाक !
तेरा बड़ा शुक्र है कि तू ने मुझे मुसल्मान बनाया

अज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ से रिवायत है कि नूर वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ بِالْاِسْلَامِ" या'नी इस्लाम की ने'मत पर **अल्लाह** का शुक्र है। कहते हुए सुना तो इर्शाद फ़रमाया : "बेशक तू ने **अल्लाह** पाक की बहुत बड़ी ने'मत का शुक्र अदा किया है।" (الزہد لابن مبارک،ص318،حدیث:911)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ अ़र्ज़ करते हैं :

उन की उम्मत में बनाया उन्हें रह़मत भेजा　　यूं न फ़रमा कि तेरा रह़्म में दा'वा क्या है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 171)

शर्हे कलामे रज़ा : ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** पाक ! क़ियामत के दिन तू मुझ से येह न फ़रमाना कि मेरा रह़मत में ह़िस्सा नहीं है क्यूं कि तेरा बड़ा फ़ज़्लो करम है कि तू ने मुझे अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में पैदा फ़रमाया है और तू ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दोनों जहान के लिये रह़मत बना कर भेजा है, जब मैं नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उम्मती हूं तो ज़रूर तेरे रह़मो करम का मुस्तह़िक़ व ह़क़दार हूं।

शहन्शाहे सुख़न, मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ किस नाज़ भरे अन्दाज़ में अ़र्ज़ करते हैं :

शाफ़ेए रोज़े क़ियामत का हूं अदना उम्मती　　फिर ह़सन क्या ग़म अगर मैं बारे इ़स्यां ले चला

(ज़ौक़े ना'त, स. 44)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ऐ आ़शिक़ाने मीलादे मुस्त़फ़ा ! हम ऐसे प्यारे नबी के उम्मती हैं कि जिन के बारे में कुरआने करीम के पारह 11 **सूरतुत्तौबह** की आयत नम्बर 128 में इर्शाद होता है :

لَقَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ عَزِيۡزٌ عَلَيۡهِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِيۡصٌ عَلَيۡكُمۡ بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۲۸﴾

तरजमा : बेशक तुम्हारे पास तुम में से वोह अ़ज़ीम रसूल तशरीफ़ ले आए जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना बहुत भारी गुज़रता है, वोह तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले, मुसल्मानों पर बहुत मेह्रबान, रह़मत फ़रमाने वाले हैं।

जिस सुहानी घड़ी चमका त़यबा का चांद   उस दिल अफ़रोज़ साअ़त पे लाखों सलाम
पहले सज्दे पे रोज़े अज़ल से दुरूद   यादगारिये उम्मत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

तीन दुआ़एं

हम गुनहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने मुझे तीन सुवाल अ़त़ा फ़रमाए, मैं ने दो बार (तो दुन्या में) अ़र्ज़ कर ली : "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاُمَّتِیْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاُمَّتِی या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मेरी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ **अल्लाह** पाक ! मेरी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।" और तीसरी अ़र्ज़ उस दिन के लिये उठा रखी जिस में मख़्लूक़े इलाही मेरी त़रफ़ नियाज़ मन्द (मोह़ताज) होगी यहां तक कि (**अल्लाह** पाक के ख़लील) ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام भी मेरे नियाज़ मन्द (ह़ाजत मन्द) होंगे। (مسلم،ص318،حدیث:1904)

वोह जहन्नम में गया जो उन से मुस्तग़नी हुवा   है ख़लीलुल्लाह को ह़ाजत रसूलुल्लाह की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मां बाप से भी ज़ियादा मेह्रबान

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ऐ गुनाहगाराने उम्मत ! क्या तुम ने अपने मालिको मौला की येह कमाले राफ़त (या'नी मेह्रबानी) व रह़मत अपने ह़ाल पर न देखी कि बारगाहे इलाही से तीन सुवाल हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को मिले कि जो चाहो मांग लो अ़ता होगा। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन में कोई सुवाल अपनी ज़ाते पाक के लिये न रखा, सब तुम्हारे ही काम में सर्फ़ फ़रमा दिये, दो सुवाल दुन्या में किये वोह भी तुम्हारे वासिते, तीसरा आख़िरत को उठा रखा, वोह तुम्हारी उस बड़ी ज़रूरत के वासिते जब उस मेह्रबान मौला, रऊफ़ो रह़ीम आक़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सिवा कोई काम आने वाला, बिगड़ी बनाने वाला न होगा وَاللهِ الْعَظِيْم ! क़सम उस की जिस ने उन्हें आप पर मेह्रबान किया ! हरगिज़ हरगिज़ कोई मां अपने अ़ज़ीज़ प्यारे इक्लोते बेटे पर कभी भी इतनी मेह्रबान नहीं जिस क़दर वोह अपने एक उम्मती पर मेह्रबान हैं।" (फ़तावा रज़विय्या, 29/583 तस्हीलन)

मोमिन हूं मोमिनों पे रऊफ़ो रह़ीम हो   साइल हूं साइलों को ख़ुशी لَا نَهَر की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 212)

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह ! ऐ मेरे आक़ा ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं मोमिन हूं और आप के रब ने क़ुरआने करीम में फ़रमाया है कि आप मोमिनों पर रऊफ़ो रह़ीम या'नी बेह़द मेह्रबान और रह़मत फ़रमाने वाले हैं लिहाज़ा मुझ पर भी लुत्फ़ो रह़मत फ़रमाएं, मैं आप के दर का सुवाली हूं और मांगने वालों को झिड़कना आप की शान नहीं।

घर आमिना के चलो चल के अ़र्ज़ करते हैं   हमें हो भीक इ़नायत नबी की आमद है
न मांगने में कसर साइलो कोई रखना   जो चाहो मांग लो ने'मत नबी की आमद है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

आईडियल रोल मोडल

ऐ आ़शिक़ाने मीलादे मुस्त़फ़ा ! दुन्या में हम पर कोई थोड़ी सी भी शफ़्क़त कर दे तो हम उस के एह़सान मन्द रहते हैं लेकिन बीबी आमिना के लाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम पर जिस क़दर एह़सानात हैं वोह बेह़द्दो बे शुमार हैं, हमें चाहिये कि इन की सुन्नतों को अपनाएं, इन के मुबारक फ़रामीन पर अ़मल करें, जिस बात और जिस काम से रसूले पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें रोका है उस से रुक जाएं। काश ! काश ! काश !

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अपने एक कलाम में बड़े पुरसोज़ अन्दाज़ में आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में फ़रियाद और रसूले पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अपनी उम्मत से बेह़द मह़ब्बत का बयान फ़रमाया है, ज़रा हम भी अपने ह़ाल पर नज़र करें और देखें कि ऐसे शफ़ीक़ो मेहरबान, रह़मत वाले आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इतनी इनायात पर हम बारगाहे रिसालत में क्या पेश करते हैं।

मुस्त़फ़ा ख़ैरुल वरा हो सरवरे हर दो सरा हो
अपने अच्छों का तसद्दुक़ हम बदों को भी निबाहो
किस के फिर हो कर रहें हम गर तुम्हीं हम को न चाहो
बद हंसें तुम उन की ख़ात़िर रात भर रोओ कराहो
बद करें हर दम बुराई तुम कहो उन का भला हो
हम वोही शायाने रद हैं तुम वोही शाने सख़ा हो
हम वोही बे शर्मो बद हैं तुम वोही काने ह़या हो
हम वोही क़ाबिले सज़ा के तुम वोही रह़्मे ख़ुदा हो
उ़म्र भर तो याद रख्खा वक़्त पर क्या भूलना हो
वक़्ते पैदाइश न भूले کَیْفَ یَنْسٰی क्यूं क़ज़ा हो

येह भी मौला अ़र्ज़ कर दूं
भूल अगर जाओ तो क्या हो
वोह हो जो तुम पर गिरां है
वोह हो जो हरगिज़ न चाहो
वोह हो जिस का नाम लेते
दुश्मनों का दिल बुरा हो
वोह हो जिस के रद की ख़ातिर
रात दिन वक़्फ़े दुआ हो
मर मिटें बरबाद बन्दे
ख़ाना आबाद आग का हो
शाद हो इब्लीसे मल्ऊं
ग़म किसे इस क़हर का हो
तुम को हो वल्लाह तुम को
जानो दिल तुम पर फ़िदा हो
तुम को ग़म से हक़ बचाए
ग़म अ़दू को जां गुज़ा हो
क्यूं रज़ा मुश्किल से डरिये
जब नबी मुश्किल कुशा हो

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 339 ता 340)

काश ! हमारा चलना, फिरना, उठना, बैठना, खाना, पीना, लिबास, अल ग़रज़ हर काम सुन्नत के मुताबिक़ हो और हम हर वक़्त यादे मुस्तफ़ा में खोए रहें।

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आ़दत कीजिये

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 198)

ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त पारह 22 **सूरए सबा** की आयत नम्बर 28 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّ نَذِیْرًا وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝۲۸﴾ **तरजमा :** और ऐ महबूब ! हम ने आप को तमाम लोगों के लिये ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला बना कर भेजा है लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।

सारी काएनात हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत है

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़हा नम्बर 798 पर फ़रमाते हैं : इस

www.dawateislami.net

मुबारक आयत से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत आ़म्मा (या'नी सब के लिये) है, तमाम इन्सान इस के इह़ाते़ में हैं, गोरे हों या काले, अ़रबी हों या अ़जमी, पहले हों या पिछले सब के लिये आप रसूल हैं और वोह सब आप के उम्मती।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 776)

सब के आक़ा सब के रसूल

बुख़ारी व मुस्लिम की एक ह़दीसे पाक में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मुझे पांच चीज़ें ऐसी अ़ता फ़रमाई गईं जो मुझ से पहले किसी नबी को न दी गईं, उन में से एक ख़ुसूसिय्यत येह है कि दूसरे अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) ख़ास अपनी क़ौम की त़रफ़ भेजे जाते थे और मैं तमाम इन्सानों की त़रफ़ भेजा गया। (بخاری، 1/133، حدیث:335ملتقطاً)

शारेह़े बुख़ारी, ह़ज़रते मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बि'सते आ़म्मा (या'नी हर एक की त़रफ़ भेजे जाने) का मत़लब येह है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगले अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) की त़रह़ क़ौम, बस्ती, मुल्क या ज़माने के साथ ख़ास नहीं, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वतो रिसालत सारे जहां के लिये जो ह़याते ज़ाहिरी के वक़्त दुन्या में मौजूद थे उन के लिये भी और पहले वालों के लिये भी और क़ियामत तक जितने पैदा होंगे सब के लिये, ख़्वाह इन्सान हों, ख़्वाह जिन्न, ख़्वाह मलाएका, बल्कि **अल्लाह** पाक के मा सिवा तमाम मौजूदात के लिये है। (नुज़्हतुल क़ारी, 1/842 मुलख़्ख़सन)

या'नी मेरे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत किसी मख़्सूस ख़ित़्ते़, मख़्सूस बस्ती या मुल्क के लिये नहीं बल्कि सारी काएनात यहां तक कि इन्सान जिन्नात, मलाएका, ह़ैवानात, जमादात, नबातात,

www.dawateislami.net

दरख़्त, शजर ह़जर सब के लिये मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रसूल हैं।

सारे रसूलों से तुम बरतर तुम सारे नबियों के सरवर
सब से बेहतर उम्मत वाले صَلَّى اللهُ صَلَّى الله
صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم صَلَّى الله صَلَّى الله

(सामाने बख़्शिश, स. 102)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सारी उम्मत के नबी

ऐ आ़शिक़ाने मीलादे मुस्त़फ़ा ! रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सारी काएनात के लिये नबी बन कर तशरीफ़ लाने का बयान क़ुरआने करीम में एक और मक़ाम पर कुछ इस त़रह़ किया गया चुनान्चे पारह 9 **सूरतुल आ'राफ़** आयत नम्बर 158 में इर्शाद होता है : ﴿قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ جَمِیْعًا﴾ **तरजमा :** तुम फ़रमाओ : ऐ लोगो ! मैं तुम सब की त़रफ़ **अल्लाह** का रसूल हूं।

तक़रीबन साढ़े सात सो साल पहले के बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम बैज़ावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह आयते मुबारका इस बात की दलील है कि मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम जिन्नो इन्स या'नी जिन्नात व इन्सान की त़रफ़ रसूल बना कर भेजे गए और रुसुले इ़ज़ाम (या'नी दीगर रसूल) सिर्फ़ उन की अपनी क़ौम की त़रफ़ भेजे गए।

(تفسیر بیضاوی، پ9، الاعراف، تحت الآیۃ:158، 3/65)

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में इर्शाद हुवा : "اُرْسِلْتُ اِلَى الْخَلْقِ كَآفَّةً" मैं (**अल्लाह** पाक की) तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ (रसूल बना कर) भेजा गया हूं।

(مسلم، ص210، حدیث:1167)

www.dawateislami.net

मेरे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सारी मख़्लूक़ की त़रफ़ **अल्लाह** के रसूल हैं, येह शरफ़ और किसी भी नबी को अ़त़ा नहीं हुवा, येह सिर्फ़ प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यत है।

जिन्नो इन्स के नबी صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम जिन्नों और इन्सानों की त़रफ़ भेजे गए इस लिये आप को "रसूलुस्सक़लैन" कहते हैं। जिन्नात का आप के दरबार में ह़ाज़िर होना, इन का ईमान लाना फिर अपनी क़ौम की त़रफ़ लौट कर उन्हें दा'वते इस्लाम देना क़ुरआने करीम में मौजूद है। अक्सर उ़लमा के नज़्दीक हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जिन्नो इन्स या'नी जिन्नात व इन्सानों की त़रफ़ मब्ऊ़स होना आप ही की ख़ुसूसिय्यत है और बा'ज़ मुह़क़्क़िक़ीन उ़लमा के नज़्दीक आप صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बि'सत या'नी भेजा जाना तमाम अज्ज़ाए आ़लम या'नी दुन्या के हर हर ह़िस्से हर हर चीज़ और हर क़िस्म की मौजूदात के लिये है ख़्वाह वोह जमादात व नबातात हों या ह़ैवानात, आप मौजूदात के तमाम ज़र्रों और कुल काएनात की तक्मील व तरबियत फ़रमाने वाले हैं। (تکمیل الایمان، ص128، 127)

तू है ख़ुरशीदे रिसालत प्यारे छुप गए तेरी ज़िया में तारे
अम्बिया और हैं सब महपारे तुझ से ही नूर लिया करते हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 112)

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप रिसालत के वोह सूरज हैं कि जब आप की रोशनी आई तो सारे तारे छुप गए, अब पिछले तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام की शरीअ़तों के अह़कामात पर अ़मल नहीं किया जाएगा बल्कि अब सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो इर्शादात फ़रमाएंगे इन का कहा माना जाएगा और अब इन पर ईमान लाना

www.dawateislami.net

शर्त़ हो गया अगर इन पर ईमान न लाए तो मुसल्मान नहीं होंगे, यूं सारे नबियों ने भी आप से ही नूर लिया है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

हर चीज़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत जानती है

ह़दीसे पाक में है : कोई शै ऐसी नहीं जो मुझे **अल्लाह** का रसूल न जानती हो सिवाए बे ईमान जिन्न और आदमियों के। (معجم کبیر، 22/262، حدیث:672)

जो जिन्नात और इन्सान ईमान नहीं लाए वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं जानते बाक़ी सारी मख़्लूक़ जानती है। **अल्लाह** करे कि एक सेकन्ड के करोड़वें हिस्से के लिये भी ऐसा वक़्त न आए कि हम सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जानने और मानने से मह़रूम हो जाएं। اٰمِين بِجاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى اللّٰهُ عليهِ واٰلهٖ وسلّم

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक एक रूह़ानियत तो हर हर नबात, हर हर जमाद से मुतअ़ल्लिक़ है इसे ख़्वाह उस की रूह़ कहा जाए या और कुछ, वोही मुकल्लफ़ है ईमान व तस्बीह़ के साथ। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 532)

या'नी हर दरख़्त, पथ्थर, पहाड़ अपनी ज़बान में तस्बीह़ भी पढ़ते हैं, अपनी अपनी ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ ईमान भी रखते हैं।

पहाड़ों का हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से गुफ़्त्गू करना

जब इस्लाम के शुरूअ़ का दौर था उस वक़्त ग़ैर मुस्लिम हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सख़्त दुश्मन थे। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लिये जा रहे थे, राह में एक पहाड़ पर तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाया, पहाड़ से आवाज़ आई : हुज़ूर ! मुझ पर न तशरीफ़ लाएं कि मुझ

www.dawateislami.net

पर कोई जगह अम्न की नहीं, मुझे ख़ौफ़ है कि अगर कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को मुझ पर पा लिया और ईज़ा दी तो **अल्लाह** पाक मुझ पर वोह सख़्त अ़ज़ाब नाज़िल करेगा कि कभी न नाज़िल किया होगा। सामने दूसरा पहाड़ था उस ने पुकारा "اِلَيَّ يَارَسُوْلَ الله", "**या रसूलल्लाह !** मेरी तरफ़ तशरीफ़ लाएं !" सरकार (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस पर तशरीफ़ ले गए।

(شرح الزرقانی علی مواہب اللدنیہ 512/6, मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 533)

उन पर दुरूद जिन को ह़जर तक करें सलाम　उन पर सलाम जिन को तह़िय्यत शजर की है
जिन्नो बशर सलाम को ह़ाज़िर हैं अस्सलाम　येह बारगाह मालिके जिन्नो बशर की है
सब बह़्रो बर सलाम को ह़ाज़िर हैं अस्सलाम
तम्लीक इन्हीं के नाम तो हर बह़्रो बर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 209)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सिर्फ़ हुज़ूर ही रह़्मतुल्लिल आ़लमीन हैं

ग़ज़ालिये दौरां, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद अह़मद सईद काज़िमी शाह साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रह़्मतुल्लिल आ़लमीन होना हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ास वस्फ़ है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़लावा कोई "रह़्मतुल्लिल आ़लमीन" नहीं हो सकता, जब (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की) रिसालत कुल मख़्लूक़ के लिये आ़म है तो रह़मत भी सारे जहानों के लिये आ़म और **अल्लाह** के सिवा हर ज़र्रे को शामिल क़रार पाई। وَلِلّٰهِ الْحَمْد ! (मक़ालाते काज़िमी, 1/99 मुल्तक़तन)

ह़ज़रते जिब्राईल पर रह़मते सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ह़दीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा कि आप को हमारी रह़मत से क्या नसीब हुवा ?

www.dawateislami.net

उन्हों ने अ़र्ज़ की : सरकार ! आप के लुत्फ़ो करम ने मेरी क़िस्मत जगा दी वरना मैं ख़ातिमे और अपने अन्जाम से अ़र्से से हैरत ज़दा था लेकिन जूंही आप की गुलामी का शरफ़ नसीब हुवा और येह आयाते करीमा ﴿ ذِیْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِی الْعَرْشِ مَكِیْنٍ ۙ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِیْنٍ ؕ ﴾ **तरजमा :** जो कुव्वत वाला है, अ़र्श के मालिक के हुज़ूर इ़ज़्ज़त वाला है। वहां उस का हुक्म माना जाता है, अमानत दार है। (پ30،التکویر:20،21)

(जब) नाज़िल हुई और **अल्लाह** पाक ने मेरी ता'रीफ़ फ़रमाई तो आप के सदक़े में मुझे मुकम्मल इत़्मीनान नसीब हुवा।

(تفسیر بحر العلوم للسمرقندی،پ17،الانبیاء،تحت الآیۃ:107،382/2)

अज़ल में ने'मतें तक़्सीम कीं जब ह़क़ तआ़ला ने

लिखी जिब्रील की तक़्दीर में ख़िदमत मुह़म्मद की

(क़बालए बख़्शिश, स. 258)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हर जगह उम्मत को याद रखा

मश्हूर मुफ़स्सिर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शैख़ इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रह़मत से येह भी है कि आप ने अपनी उम्मत को हर जगह याद रखा, मक्कए पाक में थे तो भी उम्मत याद थी, मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ ले गए तो भी उम्मत को न भुलाया, मस्जिदे मुकर्रम में पहुंचे तो भी, हुजरए पाक में तशरीफ़ फ़रमा हुए तो भी, अ़र्श की चोटी से गुज़र कर ''क़ाब क़ौसैन'' जैसे बुलन्द मक़ाम पर भी उम्मत को याद फ़रमाया। (تفسیر روح البیان، پ17،الانبیاء،تحت الآیۃ:107،527/5)

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा याद उस की अपनी आ़दत कीजिये

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 198)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

कुरआने करीम और नूरे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त पारह 6 **सूरतुन्निसाअ** की आयत नम्बर 174 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿يٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكُمْ نُوْرًا مُّبِیْنًا﴾ **तरजमा :** ऐ लोगो ! बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से वाज़ेह़ दलील आ गई और हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन नूर नाज़िल किया।

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! नूर वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर होने का बयान कुरआने करीम में एक और मक़ाम पर कुछ इस त़रह़ है : पारह 6 **सूरए माइदह** की आयत नम्बर 15 में इर्शाद होता है : ﴿قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِیْنٌ﴾ (پ6، المآئدۃ:15) **तरजमा :** बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक नूर आ गया और एक रोशन किताब।

आज से तक़रीबन एक हज़ार साल पहले के बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन अह़मद वाह़िदी नैशापूरी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 468 हि.) फ़रमाते हैं : इस आयते मुबारका में नूर से मुराद **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम चीज़ों को रोशन कर दिया।

इसी त़रह़ तक़रीबन सात सो साल पहले के बुज़ुर्ग मश्हूर मुफ़स्सिर ह़ज़रते इमाम अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुह़म्मद ख़ाज़िन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 741 हि.) इस आयत के तह़त तफ़्सीरे ख़ाज़िन में लिखते हैं : नूर से मुराद मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, **अल्लाह** पाक ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम "नूर" इस लिये रखा कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ से हिदायत ह़ासिल की जाती है जिस त़रह़ अंधेरे में रोशनी के ज़रीए़ रास्ता तलाश किया जाता है। (تفسیر خازن، پ6، المائدۃ، تحت الآیۃ:15، 1/477)

नूर वाला आ गया सल्ले अ़ला ख़ुश आमदीद — छट गए ज़ुल्मत के बादल दूर अंधेरा हो गया
दिल मेरा दो जगमगा सल्ले अ़ला ख़ुश आमदीद — भर दो सीने में सुरूर और आंख कर दो नूर नूर

(वसाइले बख़्शिश, स. 212, 213 मुल्तक़त़न)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नूर ही नहीं बल्कि नूरों के भी नूर

अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद आलूसी बग़दादी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ मशहूर तफ़्सीर "रूहुल मआ़नी" में इस आयत के तह़्त लिखते हैं : "وَهُوَنُوْرُ الْاَنْوَارِ وَالنَّبِیُّ الْمُخْتَارُ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" इस नूर से मुराद तमाम नूरों के नूर, नबिय्ये मुख़्तार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ात है।

(تفسیر روح المعانی، پ6، المائدۃ، تحت الآیۃ:15، 367/5)

नूर का आना ! मरह़बा

इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम के उस्ताज़ के भी उस्ताज़ इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि **अल्लाह** पाक ने सब से पहले किस शै को पैदा फ़रमाया ? इर्शाद फ़रमाया : "ऐ जाबिर ! वोह तेरे नबी का नूर है जिसे **अल्लाह** पाक ने पैदा फ़रमाया।"

(الجزء المفقود من المصنف عبد الرزاق، ص63-64، حدیث:18)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आयते मुबारका और ह़दीसे पाक से नूर वाले आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर और पुरनूर होने का बयान हुवा। अब क्यूं न हम झूम झूम कर और मिल कर पढ़ें :

सारे आ़लम में येह देखो नूर कैसा छाया है
नूर वाला आया है हां नूर ले कर आया है

ह़क़ ने पैदा आज अपने प्यारे को फ़रमाया है
चार जानिब रोशनी है सब समां है नूर नूर

नूर वाला आमिना बीबी के घर में आया है
आओ आओ नूर की ख़ैरात लेने को चलें

आ गया है नूर वाला, नूर वाला आया है
आगे पीछे दाएं बाएं नूर है चारों त़रफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 460)

www.dawateislami.net

अगले हफ़्ते का रिसाला

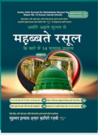
अमीरे अहले सुन्नत से
महब्बते रसूल
के बारे में 14 सवाल जवाब
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी